

**प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा दिनांक 15 अगस्त 2014 को लाल किले की प्राचीर से 68वें स्वतंत्रता दिवस समारोह के अवसर पर राष्ट्र को संबोधन**

मेरे प्यारे देशवासियो,

आज देश और दुनिया में फैले हुए सभी हिन्दुस्तानी आज़ादी का पर्व मना रहे हैं। इस आज़ादी के पावन पर्व पर प्यारे देशवासियों को भारत के प्रधान सेवक की अनेक-अनेक शुभकामनाएँ। (तालियां) मैं आपके बीच प्रधान मंत्री के रूप में नहीं, प्रधान सेवक के रूप में उपस्थित हूँ। (तालियां) देश की आज़ादी का जंग कितने वर्षों तक लड़ा गया, कितनी पीढ़ियाँ खप गईं, अनगिनत लोगों ने बलिदान दिए, जवानी खपा दी, जेल में ज़िन्दगी गुज़ार दी। देश की आज़ादी के लिए मर-मिटने वाले समर्पित उन सभी आज़ादी के सिपाहियों को मैं शत-शत वंदन करता हूँ, नमन करता हूँ। (तालियां)

आज़ादी के इस पावन पर्व पर भारत के कोटि-कोटि जनों को भी मैं प्रणाम करता हूँ और आज़ादी के जंग के लिए जिन्होंने कुर्बानियाँ दीं, उनका पुण्य स्मरण करते हुए हम आज़ादी के इस पावन पर्व पर माँ भारती के कल्याण के लिए हमारे देश के गरीब, पीड़ित, दलित, शोषित, समाज के पिछड़े हुए सभी लोगों के कल्याण का, उनके लिए कुछ न कुछ कर गुज़रने का संकल्प करने का पर्व है।

मेरे प्यारे देशवासियो,

राष्ट्रीय पर्व, राष्ट्रीय चरित्र को निखारने का एक अवसर होता है। राष्ट्रीय पर्व से प्रेरणा ले करके भारत के राष्ट्रीय चरित्र, जन-जन का राष्ट्रीय चरित्र जितना अधिक निखरे, जितना अधिक राष्ट्र के लिए समर्पित हो, हर कार्यकलाप राष्ट्रहित की कसौटी पर कसे जाएँ, अगर उस प्रकार का जीवन जीने का हम संकल्प करते हैं, तो आज़ादी का पर्व भारत को नई ऊँचाइयों पर ले जाने का एक प्रेरणा पर्व बन सकता है। (तालियां)

मेरे प्यारे देशवासियो,

यह देश राजनेताओं ने नहीं बनाया है, यह देश शासकों ने नहीं बनाया है, यह देश सरकारों ने भी नहीं बनाया है। यह देश हमारे किसानों ने बनाया है, (तालियां) हमारे मजदूरों ने बनाया है, हमारी उन माताओं और बहनों ने बनाया है, हमारे उन नौजवानों ने बनाया है, हमारे देश के ऋषियों, मुनियों, आचार्यों ने, शिक्षकों ने, वैज्ञानिकों ने, समाजसेवकों ने, पीढ़ी दर पीढ़ी कोटि-कोटि जनों की तपस्चर्या से आज राष्ट्र यहाँ पहुँचा है। देश के लिए जीवन भर साधना करने वाले ये सभी पीढ़ियाँ, सभी महानुभाव अभिनन्दन के अधिकारी हैं।

यह भारत के संविधान की शोभा है, भारत के संविधान का सामर्थ्य है कि एक छोटे से नगर का गरीब परिवार का एक बालक आज लाल किले की प्राचीर से भारत के तिरंगे झण्डे पर उसके सामने सिर झुकाने के लिए उसने सौभाग्य प्राप्त किया। (तालियां) यह भारत के लोकतंत्र की ताकत है, यह भारत के संविधान के रचयिताओं ने दिया हुआ हमें अनमोल सौगात है। मैं भारत के संविधान के निर्माताओं को इस पर नमन करता हूँ।

भाइयो-बहनो, आज़ादी के बाद देश आज जहाँ पहुँचा है, उसमें इस देश के सभी प्रधानमंत्रियों का योगदान है, इस देश की सभी सरकारों का योगदान है, इस देश के सभी राज्यों की सरकारों का भी योगदान है। मैं वर्तमान भारत को उस ऊँचाई पर ले जाने का प्रयास करने वाली सभी पूर्व सरकारों की, सभी पूर्व प्रधान मंत्रियों को, उनके सभी कामों को, जिनके कारण राष्ट्र का गौरव बढ़ा है, उन सबके प्रति इस पल आदर का भाव व्यक्त करना चाहता हूँ, मैं आभार की अभिव्यक्ति करना चाहता हूँ। (तालियां)

यह देश पुरातन सांस्कृतिक धरोहर की उस नींव पर खड़ा है, जहाँ पर वेदकाल में हमें एक ही मंत्र सुनाया जाता है, जो हमारी कार्य संस्कृति का परिचय है, हम सीखते आए हैं, पुण्यस्मरण करते आए हैं- “संगच्छध्वम् संवदध्वम् सं वो मनांसि जानताम्।”..... हम साथ चलें, मिलके चलें, मिलके सोचें, मिलके संकल्प करें और मिल करके हम देश को आगे बढ़ाएँ। इस मूल मंत्र को ले करके (तालियां) सवा सौ करोड़ देशवासियों ने देश को आगे बढ़ाया है।

कल ही नई सरकार के प्रथम संसद के सत्र का समापन हुआ। मैं आज गर्व से कहता हूँ कि संसद का सत्र हमारी सोच की पहचान है, हमारे इरादों की अभिव्यक्ति है। हम बहुमति के बल पर चलने वाले लोग नहीं हैं, हम बहुमति के बल पर आगे बढ़ना नहीं चाहते हैं। हम सहमति के मजबूत धरातल पर आगे बढ़ना चाहते हैं। “संगच्छध्वम्” और इसलिए इस पूरे संसद के कार्यकाल को देश ने देखा होगा। सभी दलों का साथ लेकर के, विपक्ष को जोड़ करके, कंधे से कंधा मिलाकर चलने में हमें अभूतपूर्व सफलता मिली है और उसका यश सिर्फ प्रधानमंत्री को नहीं जाता है, उसका यश सिर्फ सरकार में बैठे हुए लोगों को नहीं जाता है, उसका यश प्रतिपक्ष को भी जाता है, प्रतिपक्ष के सभी नेताओं को भी जाता है, प्रतिपक्ष के सभी सांसदों को भी जाता है और लाल किले की प्राचीर से, गर्व के साथ, मैं इन सभी सांसदों का अभिवादन करता हूँ। सभी राजनीतिक दलों का भी अभिवादन करता हूँ, जहाँ सहमति की मजबूत धरातल पर हम राष्ट्र को आगे ले जाने के महत्वपूर्ण निर्णयों को कर-करके हमने संसद का कल के सत्र का समापन किया है।

भाइयो-बहनो, मैं दिल्ली के लिए आउटसाइडर हूं, मैं दिल्ली की दुनिया का इंसान नहीं हूं। मैं यहां के राज-काज को भी नहीं जानता। यहां की एलीट क्लास से तो मैं बहुत अछूता रहा हूं, लेकिन एक बाहर के व्यक्ति ने, एक आउटसाइडर ने दिल्ली आ करके पिछले दो महीने में, एक इनसाइडर व्यू लिया, तो मैं चौंक गया! यह मंच राजनीति का नहीं है, राष्ट्रनीति का मंच है और इसलिए मेरी बात को राजनीति के तराजू से न तोला जाए। मैंने पहले ही कहा है, मैं सभी पूर्व प्रधानमंत्री, पूर्व सरकारों का अभिवादन करता हूं, जिन्होंने देश को यहां तक पहुंचाया।

मैं बात कुछ और करने जा रहा हूं (तालियां) और इसलिए इसको राजनीति के तराजू से न तोला जाए। मैंने जब दिल्ली आ करके एक इनसाइडर व्यू देखा, तो मैंने अनुभव किया, मैं चौंक गया। ऐसा लगा जैसे एक सरकार के अंदर भी दर्जनों अलग-अलग सरकारें चल रही हैं। हरेक की जैसे अपनी-अपनी जागीरें बनी हुई हैं। मुझे बिखराव नज़र आया, मुझे टकराव नज़र आया। एक डिपार्टमेंट दूसरे डिपार्टमेंट से भिड़ रहा है और यहां तक भिड़ रहा है कि सुप्रीम कोर्ट के दरवाजे खट-खटा करके एक ही सरकार के दो डिपार्टमेंट आपस में लड़ाई लड़ रहे हैं। यह बिखराव, यह टकराव, एक ही देश के लोग! हम देश को कैसे आगे बढ़ा सकते हैं? और इसलिए मैंने कोशिश प्रारम्भ की है, उन दीवारों को गिराने की, मैंने कोशिश प्रारम्भ की है सरकार एक असेम्बलड एन्टिटी नहीं, बट एक ऑर्गेनिक युनिटी बने, ऑर्गेनिक एन्टिटी बने। एकरस हो सरकार - एक लक्ष्य, एक मन, एक दिशा, एक गति, एक मति - इस मुकाम पर हम देश को चलाने का संकल्प करें। हम चल सकते हैं।

आपने कुछ दिन पहले इन दिनों अखबारों में चर्चा चलती है कि मोदी जी की सरकार आ गई, अफसर लोग समय पर ऑफिस जाते हैं, समय पर ऑफिस खुल जाते हैं, लोग पहुंच जाते हैं। मैं देख रहा था, हिन्दुस्तान के नेशनल न्यूज़पेपर कहे जाएं, टीवी मीडिया कहा जाए, ये प्रमुख रूप से खबरें छप रही थीं। सरकार के मुखिया के नाते तो मुझे आनन्द आ सकता है कि देखो भाई, सब समय पर चलना शुरू हो गया, सफाई होने लगी, लेकिन मुझे आनन्द नहीं आ रहा था, मुझे पीड़ा हो रही थी। वो बात मैं आज पब्लिकली कहना चाहता हूं। इसलिए कहना चाहता हूं क्या इस देश में सरकारी अफसर समय पर दफ्तर जाएं, यह कोई न्यूज़ होती है क्या? और अगर वह न्यूज़ बनती है, तो हम कितने नीचे गए हैं, कितने गिरे हैं, इसका वह सबूत बन जाती है और इसलिए भाइयो-बहनो, सरकारें कैसे चली हैं? आज वैश्विक स्पर्धा में कोटि-कोटि भारतीयों के सपनों को साकार करना होगा तो यह होती है, चलती है, से देश नहीं चल सकता।

जन-सामान्य की आशा-आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए, शासन व्यवस्था नाम का जो पुर्जा है, जो मशीन है, उसको और धारदार बनाना है, और तेज़ बनाना है, और गतिशील बनाना है और उस दिशा में हम प्रयास कर रहे हैं और मैं आपको विश्वास देता हूँ, मेरे देशवासियों, इतने कम समय से दिल्ली से बाहर से आया हूँ, लेकिन मैं देशवासियों को विश्वास दिलाता हूँ कि सरकार में बैठे हुए लोगों का सामर्थ्य बहुत है - चपरासी से लेकर कैबिनेट सेक्रेटरी तक हर कोई सामर्थ्यवान है, हरेक की एक शक्ति है, उसका अनुभव है। मैं उन शक्ति को जगाना चाहता हूँ, मैं उस शक्ति को जोड़ना चाहता हूँ और उस शक्ति के माध्यम से राष्ट्र कल्याण की गति को तेज करना चाहता हूँ (तालियां) और मैं करके रहूंगा। यह हम पाकर रहेंगे, हम करके रहेंगे, यह मैं देशवासियों को विश्वास दिलाना चाहता हूँ और यह मैं 16 मई को नहीं कह सकता था, लेकिन आज दो-ढाई महीने के अनुभव के बाद, 15 अगस्त को तिरंगे झंडे के साक्ष्य से कह रहा हूँ, यह संभव है, यह होकर रहेगा। (तालियां)

भाइयो-बहनो, क्या देश हमारे जिन महापुरुषों ने आज़ादी दिलाई, क्या उनके सपनों का भारत बनाने के लिए हमारा भी कोई कर्तव्य है की नहीं है, हमारा भी कोई राष्ट्रीय चरित्र है की नहीं है? उस पर हमने गंभीरता से सोचने का समय आ गया है। भाइयो-बहनो, कोई मुझे बताए कि हम जो भी कर रहे हैं दिन भर, शाम को कभी अपने आपको पूछा कि मेरे इस काम के कारण मेरे देश के गरीब से गरीब का भला हुआ के नहीं हुआ, मेरे देश के हितों की रक्षा हुई कि न हुई, मेरे देश के कल्याण के काम में आया कि नहीं आया? क्या सवा सौ करोड़ देशवासियों का यह मंत्र नहीं होना चाहिए कि जीवन का हर कदम देशहित में होगा? दुर्भाग्य कैसा है?

आज देश का एक ऐसा माहौल बना हुआ है कि किसी से कोई भी काम लेकर के जाओ, तो कहता है, इसमें मेरा क्या? वहीं से शुरू करता है, इसमें मेरा क्या? और जब उसको पता चलेगा कि इसमें उसका कुछ नहीं है, तो तुरन्त बोलता है, तो फिर मुझे क्या? (तालियां) ये मेरा क्या और मुझे क्या? इस दायरे से हमें बाहर आना है। हर चीज़ अपने लिए नहीं होती है। कुछ चीज़ें देश के लिए भी हुआ करती हैं और इसलिए हमारे राष्ट्रीय चरित्र को हमने निखारना है। मेरा क्या, मुझे क्या, उससे ऊपर उठ करके देशहित के हर काम के लिए मैं आया हूँ, मैं आगे हूँ, यह भाव हमें जगाना है।

भाइयो-बहनो, आज जब हम बलात्कार की घटनाओं की खबरें सुनते हैं, हमारा माथा शर्म से झुक जाता है। लोग अलग-अलग तर्क देते हैं, हर कोई मनोवैज्ञानिक बन करके अपने बयान देता है, लेकिन भाइयो-बहनो, मैं आज इस मंच से मैं उन माताओं और उनके पिताओं से पूछना चाहता हूँ, हर मां-

बाप से पूछना चाहता हूँ कि आपके घर में बेटी 10 साल की होती है, 12 साल की होती है, मां और बाप चौकन्ने रहते हैं, हर बात पूछते हैं कि कहां जा रही हो, कब आओगी, पहुंचने के बाद फोन करना। बेटी को तो सैकड़ों सवाल मां-बाप पूछते हैं, लेकिन क्या कभी मां-बाप ने अपने बेटे को पूछने की हिम्मत की है (तालियां) कहां जा रहे हो, क्यों जा रहे हो, कौन दोस्त है? आखिर बलात्कार करने वाला किसी न किसी का बेटा तो है। उसके भी तो कोई न कोई मां-बाप हैं। क्या मां-बाप के नाते, हमने अपने बेटे को पूछा कि तुम क्या कर रहे हो, कहां जा रहे हो? अगर हर मां-बाप तय करे कि हमने बेटियों पर जितने बंधन डाले हैं, कभी बेटों पर भी डाल करके देखो तो सही, उसे कभी पूछो तो सही। (तालियां)

भाइयो-बहनो, कानून अपना काम करेगा, कठोरता से करेगा, लेकिन समाज के नाते भी, हर मां-बाप के नाते हमारा दायित्व है। कोई मुझे कहे, यह जो बंदूक कंधे पर उठा करके निर्दोषों को मौत के घाट उतारने वाले लोग कोई माओवादी होंगे, कोई आतंकवादी होंगे, वे किसी न किसी के तो बेटे हैं। मैं उन मां-बाप से पूछना चाहता हूँ कि आपके बेटे से कभी इस रास्ते पर जाने से पहले पूछा था कभी आपने? हर मां-बाप जिम्मेवारी ले, इस गलत रास्ते पर गया हुआ आपका बेटा निर्दोषों की जान लेने पर उतारू है। न वह अपना भला कर पा रहा है, न अपने परिवार का भला कर पा रहा है और न ही देश का भला कर पा रहा है और मैं हिंसा के रास्ते पर गए हुए, उन नौजवानों से कहना चाहता हूँ आप जो भी आज हैं, कुछ न कुछ तो भारतमाता ने आपको दिया है, तब पहुंचे हैं। आप जो भी हैं, आपके मां-बाप ने आपको कुछ तो दिया है, तब हैं। मैं आपसे पूछना चाहता हूँ, कंधे पर बंदूक ले करके आप धरती को लाल तो कर सकते हो, लेकिन कभी सोचो, अगर कंधे पर हल होगा, तो हरियाली धरती कितनी प्यारी लगेगी।(तालियां) कितनी प्यारी लगेगी? कब तक हम इस धरती को लहलुहान करते रहेंगे? कब तक हम निर्दोषों की जान लेते रहेंगे? और हमने पाया क्या है? हिंसा के रास्ते ने हमें कुछ नहीं दिया है।

भाइयो-बहनो, मैं पिछले दिनों नेपाल गया था। नेपाल में मैंने सार्वजनिक रूप से पूरे विश्व के आकर्षण करने वाली एक बात कही थी। एक ज़माना था, सम्राट अशोक जिसने युद्ध का रास्ता लिया था, लेकिन हिंसा को देख करके युद्ध छोड़, बुद्ध के रास्ते पर चले गए थे। मैं देख रहा हूँ कि नेपाल में कोई एक समय था, जब नौजवान रास्ते हिंसा के चल पड़े थे, लेकिन आज वही नौजवान संविधान की प्रतीक्षा कर रहे हैं। उन्हीं के साथ जुड़े लोग संविधान के निर्माण में लगे हैं और मैंने कहा था, शस्त्र छोड़ करके शास्त्र के

रास्ते पर चलने का अगर नेपाल एक उत्तम उदाहरण देता है, तो विश्व के हिंसा के रास्ते पर गए हुए नौजवानों को वापिस आने की प्रेरणा दे सकता है। भाइयो-बहनो, बुद्ध की भूमि, नेपाल अगर संदेश दे सकती है, तो क्या भारत की भूमि दुनिया को संदेश नहीं दे सकती है? और इसलिए समय की मांग है, हम हिंसा का रास्ता छोड़ें, भाईचारे के रास्ते पर चलें।

भाइयो-बहनो, सदियों से किसी न किसी कारणवश साम्प्रदायिक तनाव से हम गुजर रहे हैं, देश विभाजन तक हम पहुंच गए। आज़ादी के बाद भी कभी जातिवाद का ज़हर, कभी सम्प्रदायवाद का ज़हर, ये पापाचार कब तक चलेगा? किसका भला होता है? बहुत लड़ लिया, बहुत लोगों को काट लिया, बहुत लोगों को मार दिया। भाइयो-बहनो, एक बार पीछे मुड़ करके देखिए, किसी ने कुछ नहीं पाया है। सिवाय भारत मां के अंगों पर दाग लगाने के सिवा हमने कुछ नहीं किया है और इसलिए, मैं देश के उन लोगों से आह्वान करता हूं जातिवाद का ज़हर हो, सम्प्रदायवाद का ज़हर हो, प्रान्तवाद का ज़हर हो, ऊंच-नीच का भाव हो, यह देश को आगे बढ़ाने में रुकावट है। एक बार मन में तय करो, दस साल के लिए मोरेटोरियम तय करो, दस साल तक इन सारे तनावों से हम मुक्त समाज की ओर जाना चाहते हैं। (तालियां) और आप देखिए, शांति, एकता, सद्भावना, भाईचारा हमें आगे बढ़ने में कितनी ताकत देता है, एक बार देखो। मेरे देशवासियो, मेरे शब्द पर भरोसा कीजिए और मैं आपको विश्वास दिलाता हूं। अब तक किए हुए पापों को, उस रास्ते को छोड़ें, सदभावना, भाईचारे का रास्ता अपनाएं और हम देश को आगे ले जाने का संकल्प करें। मुझे विश्वास है कि हम इसको कर सकते हैं।

भाइयो-बहनो, जैसे-जैसे विज्ञान आगे बढ़ रहा है, हमें आधुनिकता की एक मन में भाव जगता है, पर हम करते क्या हैं? क्या कभी सोचा है आज हमारे देश में sex ratio का क्या हाल है? एक हजार लड़कों के सामने नौ सौ चालीस बेटियाँ पैदा होती हैं। ये समाज में असंतुलन कौन पैदा कर रहा है? ईश्वर तो नहीं कर रहा है। मैं उन डॉक्टरों से अनुरोध करना चाहता हूं, अपनी तिजोरी भरने के लिए किसी माँ के गर्भ में पल रही बेटा को मत मारिए। (तालियां) मैं उन माताओं, बहनों को कहता हूं कि आप बेटे की आस में बेटियों को बलि मत चढ़ाइए। कभी-कभी माँ-बाप को लगता है कि बेटा होगा, तो बुढ़ापे में काम आएगा। मैं सामाजिक जीवन में काम करने वाला इंसान हूं। मैंने ऐसे परिवार देखे हैं, पाँच बेटे हों, पाँचों के पास बंगले हों, घर में दस-दस गाड़ियाँ हों, लेकिन बूढ़े माँ-बाप ओल्ड एज होम में रहते हैं, वृद्धाश्रम में रहते हैं। ऐसे परिवार मैंने देखे हैं और ऐसे परिवार भी देखे हैं, जहाँ अकेली बेटा हो, संतान के रूप में वह बेटा अपने सपनों की बलि चढ़ाती है, शादी नहीं करती

और बूढ़े माँ-बाप की सेवा के लिए अपने जीवन को खपा देती है। (तालियां) यह असमानता, माँ के गर्भ में बेटियों की हत्या, ये 21वीं सदी के मानव का मन कितना कलुषित, कलंकित, कितना दाग भरा है, उसका प्रदर्शन कर रहा है। इससे हमें मुक्ति लेनी होगी और यही तो आज़ादी के पर्व का हमारे लिए संदेश है।

अभी राष्ट्रमंडल के खेल हुए हैं। भारत के खिलाड़ियों ने भारत को गौरव दिलाया है। करीब 69 जीते, 64 जीते, 64 जीते हमारे खिलाड़ी मेडल लेकर आए हैं, लेकिन उसमें 29 बेटियाँ हैं। (तालियां) गर्व करें और ताली बजाइए उन बेटियों के लिए। (तालियां) भारत की आन-बान-शान में हमारी बेटियों का भी योगदान है, हम इसको स्वीकार करें और उसे भी कंधे से कंधा मिलाकर के हम साथ लेकर चलें, तो जो सामाजिक जीवन में बुराइयाँ आई हैं, उन बुराइयों से हम मुक्ति पा सकते हैं और इसलिए भाइयो-बहनो, एक सामाजिक चरित्र के नाते, एक राष्ट्रीय चरित्र के नाते हमें उस दिशा में जाना है।

भाइयो-बहनो, देश को आगे बढ़ाना है, तो विकास ये एक ही रास्ता है। सुशासन एक ही रास्ता है। देश को आगे ले जाने के लिए ये ही दो पट्टी हैं जो गुड गवर्नेंस एंड डेवलपमेंट, उसी को लेकर के आगे चल सकते हैं और उसी को लेकर चलने का इरादा लेकर के हम चलना चाहते हैं। मैं जब गुड गवर्नेंस की बात करता हूँ तब, आप मुझे बताइए कि कोई प्राइवेट में नौकरी करता है, उसको पूछोगे, तो वह कहता है मैं जॉब करता हूँ, लेकिन जो सरकार में नौकरी करता है, उसको पूछोगे, तो वह कहता है मैं सर्विस करता हूँ। दोनों कमाते हैं, लेकिन एक के लिए जॉब है, एक के लिए सर्विस है। मैं सरकारी सेवा में लगे सभी भाइयों और बहनों से प्रश्न पूछता हूँ क्या कहीं यह 'सर्विस' शब्द, उसने अपनी ताकत खो तो नहीं दी है, अपनी पहचान खो तो नहीं दी है? सरकारी सेवा में जुड़े हुए लोग जॉब नहीं कर रहे हैं, सेवा कर रहे हैं, सर्विस कर रहे हैं। और इसलिए इस भाव को पुनर्जीवित करना, एक राष्ट्रीय चरित्र के रूप में इसको हमें आगे ले जाना, उस दिशा में हमने आगे बढ़ना है।

भाइयो-बहनो, क्या देश के नागरिकों ने राष्ट्र के कल्याण के लिए कदम उठाना चाहिए या नहीं उठाना चाहिए? आप कल्पना कीजिए, सवा सौ करोड़ देशवासी एक कदम चलें, तो यह देश सवा सौ करोड़ कदम आगे चला जाएगा। (तालियां) लोकतंत्र, यह सिर्फ सरकार चुनने का सीमित मायना नहीं है। लोकतंत्र सवा सौ करोड़ नागरिक और सरकार कंधे से कंधा मिला करके देश की आशा-आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए काम करें, यह लोकतंत्र का मायना है।

हमें जन-भागीदारी करनी है। प्यूपिलस पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप के साथ आगे बढ़ना है। हमें जनता को जोड़कर आगे बढ़ना है और उसे जोड़ने में

आगे बढ़ने के लिए, आप मुझे बताइए, आज हमारा किसान आत्महत्या क्यों करता है? साहूकार से कर्ज़ लेता है, कर्ज़ दे नहीं सकता है, मर जाता है। बेटी की शादी है, गरीब आदमी साहूकार से कर्ज़ लेता है, कर्ज़ दे नहीं पाता। जीवन भर मुसीबतों से गुज़रता है। उन मेरे गरीब परिवारों की रक्षा कौन करेगा?

भाइयो-बहनो, इस आज़ादी के पर्व पर मैं एक योजना को बहुत तेज आगे बढ़ाने का संकल्प करने के लिए आपके पास आया हूँ - एक 'प्रधान मंत्री जनधन योजना'। इस 'प्रधान मंत्री जनधन योजना' के माध्यम से हम देश के गरीब से गरीब लोगों को बैंक अकाउंट की सुविधा से जोड़ना चाहते हैं। आज करोड़ों-करोड़ परिवार हैं, (तालियां) जिसके पास मोबाइल फोन तो हैं, लेकिन बैंक अकाउंट नहीं हैं। यह स्थिति हमें बदलनी है। देश की आर्थिक संसाधन गरीब के काम आएँ, इसकी शुरुआत यहीं से होती है। यही तो है, जो खिड़की खोलता है और इसलिए 'प्रधान मंत्री जनधन योजना' के तहत जो अकाउंट खोलेगा, उसको डेबिट कार्ड दिया जाएगा और डेबिट कार्ड के साथ हर गरीब परिवार को एक लाख रुपए का बीमा सुनिश्चित कर दिया जाएगा, ताकि उसके जीवन में कोई संकट आया, तो उसके परिवारजनों को एक लाख रुपए का बीमा मिल सकता है।

भाइयो-बहनो, यह देश नौजवानों का देश है। 65 प्रतिशत देश की जनसंख्या 35 से कम आयु की है। हमारा देश विश्व का सबसे ऊंचा नौजवान देश है। क्या हमने कभी इसका फायदा उठाने के लिए सोचा है? आज दुनिया को स्किल्ड वर्कफोर्स की जरूरत है। आज भारत को भी स्किल्ड वर्कफोर्स की जरूरत है। कभी-कभार हम अच्छा ड्राइवर ढूँढते हैं, नहीं मिलता है, प्लम्बर ढूँढते हैं, नहीं मिलता है, अच्छा कुक चाहिए, नहीं मिलता है। नौजवान हैं, बेरोजगार हैं, लेकिन हमें चाहिए, वैसा नौजवान मिलता नहीं है। देश को विकास के लिए और आगे बढ़ाना है, तो 'स्किल डेवलपमेंट' ये हमारा मिशन है और 'स्किल्ड इंडिया' हिन्दुस्तान के कोटि-कोटि नौजवानों को स्किल, हुनर सीखें, उसके लिए पूरे देश में जाल और घिसी-पिटी व्यवस्थाओं से नहीं, उनको वह स्किल मिले, जो उन्हें आधुनिक भारत बनाने में काम आए। वे दुनिया के किसी भी देश में जाएँ, तो उनके हुनर की सराहना हो और हम दो प्रकार के विकास को ले करके चलना चाहते हैं। मैं ऐसे नौजवानों को भी तैयार करना चाहता हूँ, जो जॉब क्रिएटर हों और जो जॉब क्रिएट करने का सामर्थ्य नहीं रखते, संयोग नहीं है, वे विश्व के किसी भी कोने में जा करके आँख में आँख मिला करके अपने बाहुबल के द्वारा, अपनी उँगलियों के हुनर के द्वारा, अपने कौशल्य के द्वारा विश्व का हृदय जीत सकें, ऐसे नौजवानों का सामर्थ्य हम



तैयार करना चाहते हैं। भाइयो-बहनो, स्किल डेवलपमेंट को बहुत तेज़ी से आगे बढ़ाने का संकल्प लेकर मैं यह करना चाहता हूँ।

भाइयो-बहनो, विश्व बदल चुका है। मेरे प्यारे देशवासियो, विश्व बदल चुका है। अब भारत अलग-थलग, अकेला एक कोने में बैठकर अपना भविष्य तय नहीं कर सकता। विश्व की आर्थिक व्यवस्थाएँ बदल चुकी हैं और इसलिए हम लोगों को भी उसी रूप में सोचना होगा। सरकार ने अभी कई फैसले लिए हैं, बजट में कुछ घोषणाएँ की हैं और मैं विश्व को आह्वान करता हूँ, विश्व में पहुँचे हुए भारतवासियों को भी आह्वान करता हूँ कि आज अगर हमें नौजवानों को ज्यादा से ज्यादा रोजगार देना है, तो हमें मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर को बढ़ावा देना पड़ेगा। इम्पोर्ट-एक्सपोर्ट की जो स्थिति है, उसको संतुलन पैदा करना हो, तो हमें मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर पर बल देना होगा। हमारे नौजवानों की जो विधा है, सामर्थ्य है, उसको अगर काम में लाना है, तो हमें मैन्युफैक्चरिंग की ओर जाना पड़ेगा और इसके लिए हिन्दुस्तान की भी पूरी ताकत लगे, लेकिन विश्व की शक्तियों को भी हम निमंत्रण देते हैं। और इसलिए मैं आज लाल किले की प्राचीर से विश्व भर में लोगों से कहना चाहता हूँ, “कम, मेक इन इंडिया,” “आइए, हिन्दुस्तान में निर्माण कीजिए।” (तालियां) दुनिया के किसी भी देश में जाकर बेचिए, लेकिन निर्माण यहाँ कीजिए, मैन्युफैक्चर यहाँ कीजिए। हमारे पास स्किल है, टैलेंट है, डिसिप्लिन है, कुछ कर गुज़रने का इरादा है। हम विश्व को एक सानुकूल अवसर देना चाहते हैं कि आइए, “कम, मेक इन इंडिया” और हम विश्व को कहें, इलेक्ट्रिकल से ले करके इलेक्ट्रॉनिक्स तक “कम, मेक इन इंडिया”, केमिकल्स से ले करके फार्मास्युटिकल्स तक “कम, मेक इन इंडिया”, ऑटोमोबाइल्स से ले करके एग्री वैल्यू एडीशन तक “कम, मेक इन इंडिया”, पेपर हो या प्लास्टिक “कम, मेक इन इंडिया”, सन सैटेलाइट हो या सबमेरीन “कम, मेक इन इंडिया”। (तालियां) ताकत है हमारे देश में! आइए, मैं निमंत्रण देता हूँ।

और भाइयो-बहनो, मैं देश के नौजवानों को भी एक आवाहन करना चाहता हूँ, विशेष करके उद्योग क्षेत्र में लगे हुए छोटे-छोटे लोगों को आवाहन करना चाहता हूँ। मैं देश के टेक्निकल एजुकेशन से जुड़े हुए नौजवानों का आवाहन करना चाहता हूँ। जैसे मैं विश्व से कहता हूँ “मेक इन इंडिया”, मैं देश के नौजवानों को कहता हूँ - हमारा सपना होना चाहिए कि दुनिया के हर कोने में यह बात पहुंचनी चाहिए, “मेड इन इंडिया”। (तालियां) यह हमारा सपना होना चाहिए। क्या मेरे देश के नौजवान देश-सेवा करने के लिए सिर्फ भगत सिंह की तरह फांसी पर ही लटकना अनिवार्य है? भाइयो-बहनो, लालबहादुर शास्त्री जी ने “जय जवान, जय किसान” एक साथ मंत्र दिया था। जवान, जो

सीमा पर अपना सिर दे देता है, उसी की बराबरी में “जय जवान” कहा था। क्यों? क्योंकि अन्न के भंडार भर करके मेरा किसान भारत मां की उतनी ही सेवा करता है, जैसे जवान भारत मां की रक्षा करता है। (तालियां) यह भी देश सेवा है। अन्न के भंडार भरना, यह भी किसान की सबसे बड़ी देश सेवा है और तभी तो लालबहादुर शास्त्री ने “जय जवान, जय किसान” कहा था।

भाइयो-बहनो, मैं नौजवानों से कहना चाहता हूं, आपके रहते हुए छोटी-मोटी चीज़ें हमें दुनिया से इम्पोर्ट क्यों करनी पड़ें? क्या मेरे देश के नौजवान यह तय कर सकते हैं, वो ज़रा रिसर्च करें, ढूँढ़ें कि भारत कितने प्रकार की चीज़ों को इम्पोर्ट करता है और वे फैसला करें कि मैं अपने छोटे-छोटे काम के द्वारा, उद्योग के द्वारा, मेरा छोटा ही कारखाना क्यों न हो, लेकिन मेरे देश को इम्पोर्ट करने वाली कम से कम एक चीज़ मैं ऐसी बनाऊंगा कि मेरे देश को कभी इम्पोर्ट न करना पड़े। इतना ही नहीं, मेरा देश एक्सपोर्ट करने की स्थिति में आए। (तालियां) अगर हिन्दुस्तान के लाखों नौजवान एक-एक, एक-एक आइटम ले करके बैठ जाएं भारत दुनिया में एक्सपोर्ट करने वाला देश बन सकता है और इसलिए मेरा आग्रह है, नौजवानों से विशेष करके, छोटे-मोटे उद्योगकारों से - दो बातों में कॉम्प्रोमाइज़ न करें, एक ज़ीरो डिफेक्ट, दूसरा ज़ीरो इफेक्ट। हम वह मैन्युफैक्चरिंग करें, जिसमें ज़ीरो डिफेक्ट हो, ताकि दुनिया के बाज़ार से कभी वापस न आए और हम वह मैन्युफैक्चरिंग करें, जिससे ज़ीरो इफेक्ट हो, पर्यावरण पर इसका कोई नेगेटिव इफेक्ट न हो। ज़ीरो डिफेक्ट, ज़ीरो इफेक्ट के साथ मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर का सपना ले करके अगर हम आगे चलते हैं, तो मुझे विश्वास है, मेरे भाइयो-बहनो, कि जिस काम को ले करके हम चल रहे हैं, उस काम को पूरा करेंगे।

भाइयो-बहनो, पूरे विश्व में हमारे देश के नौजवानों ने भारत की पहचान को बदल दिया है। विश्व भारत को क्या जानता था? ज्यादा नहीं, अभी 25-30 साल पहले तक दुनिया के कई कोने ऐसे थे जो हिन्दुस्तान के लिए यही सोचते थे कि ये तो “सपेरो का देश” है। ये सांप का खेल करने वाला देश है, काले जादू वाला देश है। भारत की सच्ची पहचान दुनिया तक पहुंची नहीं थी, लेकिन भाइयो-बहनो, हमारे 20-22-23 साल के नौजवान, जो कम्प्यूटर पर अंगुलियां घुमाते-घुमाते दुनिया को चकित कर दिया। विश्व में भारत की एक नई पहचान बनाने का रास्ता हमारे आई.टी. प्रोफेशन के नौजवानों ने कर दिया। अगर यह ताकत हमारे देश में है, क्या देश के लिए हम कुछ सोच सकते हैं?

और इसलिए हमारा सपना है “डिजिटल इंडिया”। जब मैं “डिजिटल इंडिया” कहता हूं, तब ये बड़े लोगों की बात नहीं है, यह गरीब के लिए है।

अगर ब्रॉडबैंड कनेक्टिविटी से हिन्दुस्तान के गांव जुड़ते हैं और गांव के आखिरी छोर के स्कूल में अगर हम लॉग डिस्टेंस एजुकेशन दे सकते हैं, आप कल्पना कर सकते हैं कि हमारे उन गांवों के बच्चों को कितनी अच्छी शिक्षा मिलेगी। जहां डाक्टर नहीं पहुंच पाते, अगर हम टेलिमेडिसिन का नेटवर्क खड़ा करें, तो वहां पर बैठे हुए गरीब व्यक्ति को भी, किस प्रकार की दवाई की दिशा में जाना, उसका स्पष्ट मार्गदर्शन मिल सकता है। सामान्य मानव की रोजमर्रा की चीजें - आपके हाथ में मोबाइल फोन है, हिन्दुस्तान के नागरिकों के पास बहुत बड़ी तादाद में मोबाइल कनेक्टिविटी है, लेकिन क्या ये मोबाइल गवर्नेंस की तरफ हम जा सकते हैं? अपने मोबाइल से वो बैंक अकाउंट ऑपरेट करे गरीब आदमी, वह सरकार से अपनी चीजें मांग सके, वह अपनी अर्जी पेश करे, अपना सारा कारोबार अपने चलते-चलते मोबाइल गवर्नेंस के द्वारा कर सके और यह अगर करना है, तो, हमें 'डिजिटल इंडिया' की ओर जाना है। और 'डिजिटल इंडिया' की तरफ जाना है, तो इसके साथ हमारा यह भी सपना है कि हम आज बहुत बड़ी मात्रा में विदेशों से इलेक्ट्रॉनिक गुड्स इम्पोर्ट करते हैं।

आपको हैरानी होगी भाइयो-बहनो, ये टीवी, ये मोबाइल फोन, ये आईपैड, ये जो इलेक्ट्रॉनिक गुड्स हम लाते हैं, देश के लिए पेट्रोलियम पदार्थों को लाना अनिवार्य है, डीज़ल और पेट्रोल लाते हैं, तेल लाते हैं। उसके बाद दूसरे नम्बर पर हमारा इलेक्ट्रॉनिक गुड्स इम्पोर्ट पर खड़ा हुआ है। अगर हम 'डिजिटल इंडिया' का सपना ले करके इलेक्ट्रॉनिक गुड्स के मैनुफैक्चर के लिए चल पड़ें और हम कम से कम स्वनिर्भर बन जाएं, तो देश की तिजोरी को कितना बड़ा लाभ हो सकता है और इसलिए हम इस 'डिजिटल इंडिया' को ले करके जब आगे चलना चाहते हैं, तब ई-गवर्नेंस। ई-गवर्नेंस ईजी गवर्नेंस है, इफेक्टिव गवर्नेंस है और इकोनॉमिकल गवर्नेंस है। ई-गवर्नेंस के माध्यम से गुड गवर्नेंस की ओर जाने का रास्ता है। एक जमाना था, कहा जाता था कि रेलवे देश को जोड़ती है। ऐसा कहा जाता था। मैं कहता हूं कि आज आईटी देश के जन-जन को जोड़ने का ताकत रखती है और इसलिए हम 'डिजिटल इंडिया' के माध्यम से आईटी के धरातल पर यूनिटी का मंत्र को साकार करना चाहते हैं। भाइयो-बहनो, अगर हम इन चीजों को ले करके चलते हैं, तो मुझे विश्वास है कि 'डिजिटल इंडिया' विश्व की बराबरी करने की एक ताकत के साथ खड़ा हो जाएगा, हमारे नौजवानों में वह सामर्थ्य है, उनको यह अवसर दे रहा है।

भाइयो-बहनो, हम टूरिज्म को बढ़ावा देना चाहते हैं। टूरिज्म से गरीब से गरीब व्यक्ति को रोजगार मिलता है। चना बेचने वाला भी कमाता है,

ऑटो-रिक्शा वाला भी कमाता है, पकौड़े बेचने वाला भी कमाता है और एक चाय बेचने वाला भी कमाता है। (हंसी-तालियां) और जब चाय बेचने वाले की बात आती है, तो मुझे ज़रा अपनापन महसूस होता है। टूरिज्म के कारण गरीब से गरीब व्यक्ति को रोज़गार मिलता है। लेकिन टूरिज्म के अंदर बढ़ावा देने में भी और एक राष्ट्रीय चरित्र के रूप में भी हमारे सामने सबसे बड़ी रुकावट है हमारे चारों तरफ दिखाई दे रही गंदगी। क्या आज़ादी के बाद, इतने सालों के बाद, 21 वीं सदी के डेढ़ दशक के दरवाजे पर खड़े हैं, तब, क्या अब भी हम गंदगी में जीना चाहते हैं? मैंने यहाँ सरकार में आकर पहला काम सफाई का शुरू किया है। लोगों को आश्चर्य हुआ कि क्या यह प्रधान मंत्री का काम है? लोगों को लगता होगा कि यह प्रधान मंत्री के लिए छोटा काम होगा, मेरे लिए बहुत बड़ा काम है। सफाई करना ये बहुत बड़ा काम है। (तालियां) क्या हमारा देश स्वच्छ नहीं हो सकता है? अगर सवा सौ करोड़ देशवासी तय कर लें कि मैं कभी गंदगी नहीं करूंगा तो दुनिया की कौन-सी ताकत है, जो हमारे शहर, गाँव को आकर के गंदा कर सके? क्या इतना-सा संकल्प नहीं कर सकते हैं?

भाइयो-बहनो, 2019 में महात्मा गाँधी की 150वीं जयंती आ रही है। महात्मा गाँधी की 150वीं जयंती हम कैसे मनाएँ? महात्मा गाँधी, जिन्होंने हमें आज़ादी दी, इतने बड़े देश को दुनिया के अंदर इतना सम्मान दिलाया, उन महात्मा गाँधी को हम क्या दें? भाइयो-बहनो, महात्मा गाँधी को सबसे प्रिय था - सफाई, स्वच्छता। क्या हम तय करें कि 2019 में जब हम महात्मा गाँधी की 150वीं जयंती मनाएँगे, हमारा गाँव, हमारा शहर, हमारी गली, हमारा मोहल्ला, हमारे स्कूल, हमारे मंदिर, हमारे अस्पताल, सभी क्षेत्र, गंदगी का नामोनिशान नहीं रहने देंगे? यह सरकार से होता नहीं है, जन-भागीदारी से होता है और यह काम हम सबको मिल करके करना है।

भाइयो-बहनो, इक्कीसवीं सदी में हम जी रहे हैं। क्या कभी हमारे मन को पीड़ा हुई कि आज भी हमारी माताओं और बहनों को खुले में शौच के लिए जाना पड़ता है? डिग्निटी ऑफ विमेन, क्या यह हम सबका दायित्व नहीं है? बेचारी गाँव की माँ-बहनें अँधेरे का इंतजार करती हैं, जब तक अँधेरा नहीं आता है, वे शौच के लिए नहीं जा पाती हैं। उसके शरीर को कितनी पीड़ा होती होगी, कितनी बीमारियों की जड़ें उसमें से शुरू होती होंगी! क्या हमारी माँ-बहनों की इज्जत के लिए हम कम-से-कम शौचालय का प्रबन्ध नहीं कर सकते हैं? भाइयो-बहनो, किसी को लगेगा कि 15 अगस्त का इतना बड़ा महोत्सव बहुत बड़ी-बड़ी बातें करने का अवसर होता है।

भाइयो-बहनो, बड़ी बातों का महत्व है, घोषणाओं का भी महत्व है, लेकिन कभी-कभी घोषणाएँ एषणाएँ जगाती हैं और जब घोषणाएँ परिपूर्ण नहीं होती हैं, तब समाज निराशा की गर्त में डूब जाता है और इसलिए हम उन बातों के ही कहने के पक्षधर हैं, जिसको हम अपने देखते-देखते पूरा कर पाएँ और इसलिए मैं कहता हूँ भाइयो-बहनो, आपको लगता होगा कि क्या लाल किले से सफाई की बात करना, लाल किले से टॉयलेट की बात बताना, यह कैसा प्रधान मंत्री है?

भाइयो-बहनो, मैं नहीं जानता हूँ मेरी कैसी आलोचना होगी, इसे कैसे लिया जाए, लेकिन मैं मन से मानता हूँ। मैं गरीब परिवार से आया हूँ, मैंने गरीबी देखी है और गरीब को इज्जत मिले, इसकी शुरुआत यहीं से होती है। (तालियां) और इसलिए 'स्वच्छ भारत' का एक अभियान इसी 2 अक्टूबर से मुझे आरम्भ करना है और चार साल के भीतर-भीतर हम इस काम को आगे बढ़ाना चाहते हैं और एक काम तो मैं आज ही शुरू करना चाहता हूँ और वह है- हिन्दुस्तान के सभी स्कूलों में टॉयलेट हो, बच्चियों के लिए अलग टॉयलेट हो, तभी तो हमारी बच्चियाँ स्कूल छोड़ करके भागेंगी नहीं।

और मैं एमपीलैड फंड का जो उपयोग कर रहे हैं हमारे सांसद, उनसे आग्रह करता हूँ एक साल के लिए आपका धन स्कूलों में टॉयलेट बनाने के लिए खर्च कीजिए। सरकार अपना बजट टॉयलेट बनाने में खर्च करे। (तालियां) और मैं देश के कॉरपोरेट सेक्टर को भी आह्वान करना चाहता हूँ कि कॉरपोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी के तहत आप जो खर्च कर रहे हैं, आप उसमें प्राथमिकता स्कूलों में टॉयलेट बनाने के लिए दीजिए। सरकार के साथ मिल करके, राज्य सरकारों के साथ मिल करके एक साल के भीतर-भीतर अगली 15 अगस्त को जब हम यहाँ खड़े हों, तब विश्वास के साथ खड़े हों कि अब हिन्दुस्तान की ऐसा कोई स्कूल नहीं है कि जहाँ बच्चे और बच्चियों के लिए अलग टॉयलेट का निर्माण होना बाकी है। (तालियां)

भाइयो-बहनो, अगर हम सपने लेकर चलते हैं तो सपने पूरे भी होते हैं। मैं आज एक विशेष बात और करना चाहता हूँ। भाइयो-बहनो, देशहित की चर्चा करना, देशहित के विचारों को देना, इसका अपना महत्व है। लेकिन हमारे सांसद, वे कुछ करना भी चाहते हैं, लेकिन उन्हें अवसर नहीं मिलता है। वो अपनी बात बता सकते हैं, सरकार को चिट्ठी लिख सकते हैं, आंदोलन कर सकते हैं, मेमोरेण्डम दे सकते हैं, लेकिन फिर भी, खुद को कुछ करने का अवसर मिलता नहीं है।

मैं एक नए विचार को लेकर कि आज आपके पास आया हूँ। हमारे देश में प्रधानमंत्री के नाम से कई योजनाएं चल रही हैं, कई नेताओं के नाम से ढेर

सारी योजनाएं चल रही हैं, लेकिन मैं आज सांसद के नाम से एक योजना घोषित करता हूँ - “सांसद आदर्श ग्राम योजना”। (तालियां) हम कुछ पैरामीटर्स तय करेंगे और मैं सांसदों से आग्रह करता हूँ कि वे अपने इलाके में तीन हजार से पांच हजार के बीच का कोई भी गांव पसंद कर लें और कुछ पैरामीटर्स तय हों-वहां के स्थल, काल, परिस्थिति के अनुसार, वहां की शिक्षा, वहां का स्वास्थ्य, वहां की सफाई, वहां के गांव का वह माहौल, गांव में ग्रीनरी, गांव का मेलजोल, कई पैरामीटर्स हम तय करेंगे और हर सांसद 16 तक अपने इलाके में एक गांव को आदर्श गांव बनाए। इतना तो कर सकते हैं न भाई! करना चाहिए न! देश बनाना है तो गांव से शुरू करें। एक गांव आदर्श बनाएं और मैं 2016 का टाइम इसलिए देता हूँ कि नयी योजना है, लागू करने में, योजना बनाने में कभी समय लगता है और 16 के बाद, जब 2019 में वह चुनाव के लिए जाए, उसके पहले और दो गांवों को करे और 2019 के बाद हर सांसद, 5 साल के कार्यकाल में कम से कम 5 आदर्श गांव अपने इलाके में बनाएं।

जो शहरी क्षेत्र के एम.पी. हैं, उनसे भी मेरा आवाहन है, वे भी एक गांव पसंद करें। जो राज्यसभा के एम.पी. हैं, उनसे भी मेरा आग्रह है, वे भी एक गांव पसंद करें। हिन्दुस्तान के हर जिले में, एक अगर आदर्श गांव बनाकर हम देते हैं, तो सभी अगल-बगल के गांवों को खुद को उस दिशा में जाने का मन कर जाएगा। एक मॉडल गांव बना करके देखें, व्यवस्थाओं से भरा हुआ गांव बनाकर देखें। और मैं 11 अक्टूबर को जयप्रकाश नारायण जी की जन्म जयंती है और मैं 11 अक्टूबर को जयप्रकाश नारायण जी की जन्म जयंती पर इस “सांसद आदर्श ग्राम योजना” की कम्प्लीट ब्ल्यूप्रिंट सभी सांसदों के सामने रख दूंगा, सभी राज्य सरकारों के सामने रख दूंगा और मैं राज्य सरकारों से भी आग्रह करता हूँ (तालियां) कि आप, आप भी इस योजना के माध्यम से, अपने राज्य में जो अनुकूलता हो, वैसे सभी विधायकों के लिए एक आदर्श ग्राम बनाने का संकल्प करिए। आप कल्पना कर सकते हैं, देश के सभी विधायक एक आदर्श ग्राम बनाएं, सभी सांसद एक आदर्श ग्राम बनाएं। देखते ही देखते हिन्दुस्तान के हर ब्लॉक में एक आदर्श ग्राम तैयार हो जाएगा, जो हमें गांव की सुख-सुविधा को बदलाव लाने के लिए हमें प्रेरणा दे सकता है, हमें नई दिशा दे सकता है और इसलिए इस “सांसद आदर्श ग्राम योजना” के तहत हम आगे बढ़ना चाहते हैं।

भाइयो-बहनो, जब से हमारी सरकार बनी है, तब से अखबारों में, टी.वी. में एक चर्चा चल रही है प्लानिंग कमीशन का क्या होगा? मैं समझता हूँ कि जिस समय प्लानिंग कमीशन का जन्म हुआ, योजना आयोग का जन्म हुआ,

उस समय की जो स्थितियाँ थीं, उस समय की जो आवश्यकताएँ थीं, उसके आधार पर उसकी रचना की गई और पिछले इन वर्षों में योजना आयोग ने अपने तरीके से राष्ट्र के विकास में उचित योगदान किया है। मैं इसका आदर करता हूँ, गौरव करता हूँ, सम्मान करता हूँ, सत्कार करता हूँ, लेकिन अब देश की अंदरूनी स्थिति भी बदली हुई है, वैश्विक परिवेश भी बदला हुआ है, आर्थिक गतिविधि का केंद्र सरकारें नहीं रही हैं, उसका दायरा बहुत फैल चुका है। राज्य सरकारें विकास के केन्द्र में आ रही हैं और मैं इसको अच्छी निशानी मानता हूँ। भारत को आगे ले जाना है, तो यह राज्यों को आगे ले जाकर ही होने वाला है।

भारत के फेडेरल स्ट्रक्चर की अहमियत पिछले 60 साल में जितनी थी, उससे ज्यादा आज के युग में है। हमारे संघीय ढाँचे को मजबूत बनाना, हमारे संघीय ढाँचे को चेतनवंत बनाना, हमारे संघीय ढाँचे को विकास की धरोहर के रूप में काम लेना, मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री की एक टीम फॉर्मेशन हो, केन्द्र और राज्य की एक टीम हो, एक टीम बन करके आगे चले, तो इस काम को अब प्लानिंग कमीशन के नए रंग-रूप से सोचना पड़ेगा और इसलिए लाल किले की इस प्राचीर से एक बहुत बड़ी चली आ रही पुरानी व्यवस्था में उसका कायाकल्प भी करने की जरूरत है, उसमें बहुत बदलाव करने की आवश्यकता है और कभी-कभी पुराने घर की रिपेयरिंग में खर्चा ज्यादा होता है लेकिन संतोष नहीं होता है। फिर मन करता है, अच्छा है, एक नया ही घर बना लें और इसलिए बहुत ही कम समय के भीतर योजना आयोग के स्थान पर, एक क्रिएटिव थिंकिंग के साथ राष्ट्र को आगे ले जाने की दिशा, पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप की दिशा, संसाधनों का ऑप्टिमम युटिलाइजेशन, प्राकृतिक संसाधनों का ऑप्टिमम युटिलाइजेशन, देश की युवा शक्ति के सामर्थ्य का उपयोग, राज्य सरकारों की आगे बढ़ने की इच्छाओं को बल देना, राज्य सरकारों को ताकतवर बनाना, संघीय ढाँचे को ताकतवर बनाना, ऐसा, एक ऐसा नये रंग-रूप के साथ, नया शरीर, नयी आत्मा के साथ, नयी सोच के साथ, नयी दिशा के साथ, नये विश्वास के साथ, एक नये इंस्टीट्यूशन को हम निर्माण करेंगे और बहुत ही जल्द योजना आयोग की जगह पर यह नई इंस्टीट्यूट काम करे, उस दिशा में हम आगे बढ़ने वाले हैं।

भाइयो-बहनो, आज 15 अगस्त महर्षि अरविंद का भी जन्म जयंती का पर्व है। महर्षि अरविंद ने एक क्रांतिकारी से निकल करके योग गुरु की अवस्था को प्राप्त किया था। उन्होंने भारत के भाग्य के लिए कहा था कि “मुझे विश्वास है, भारत की दैविक शक्ति, भारत की आध्यात्मिक विरासत विश्व

कल्याण के लिए अहम भूमिका निभाएगा”। इस प्रकार के भाव महर्षि अरविन्द ने व्यक्त किए थे।

मेरी महापुरुषों की बातों में बड़ी श्रद्धा है। मेरी त्यागी, तपस्वी, ऋषियों और मुनियों की बातों में बड़ी श्रद्धा है और इसलिए मुझे आज लाल किले की प्राचीर से स्वामी विवेकानन्द जी के वो शब्द याद आ रहे हैं जब स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा था, “मैं मेरी आँखों के सामने देख रहा हूँ।” विवेकानन्द जी के शब्द थे - “मैं मेरी आँखों के सामने देख रहा हूँ कि फिर एक बार मेरी भारतमाता जाग उठी है, मेरी भारतमाता जगद्गुरु के स्थान पर विराजमान होगी, (तालियां) हर भारतीय मानवता के कल्याण के काम आएगा, यह भारत की विरासत विश्व के कल्याण के लिए काम आएगी।” ये शब्द स्वामी विवेकानन्द जी ने अपने तरीके से कहे थे।

भाइयो-बहनो, विवेकानन्द जी के शब्द कभी असत्य नहीं पुरवार हो सकते। स्वामी विवेकानन्द जी के शब्द, भारत को जगद्गुरु देखने का उनका सपना, उनकी दीर्घ दृष्टि, उस सपने को पूरा करना हम लोगों का कर्तव्य है। दुनिया का यह सामर्थ्यवान देश, प्रकृति से हरा-भरा देश, नौजवानों का देश, आने वाले दिनों में विश्व के लिए बहुत कुछ कर सकता है।

भाइयो-बहनो, लोग विदेश की नीतियों के संबंध में चर्चा करते हैं। मैं यह साफ मानता हूँ भारत की विदेश नीति के कई आयाम हो सकते हैं, लेकिन एक महत्वपूर्ण बात है, जिस पर मैं अपना ध्यान केंद्रित करना चाहता हूँ, क्या हम आज़ादी की जैसे लड़ाई लड़े, मिल-जुल करके लड़े थे, तब तो हम अलग नहीं थे, हम साथ-साथ थे। कौन सी सरकार हमारे साथ थी? कौन से शस्त्र हमारे पास थे? एक गांधी थे, सरदार थे और लक्षावती स्वातंत्र्य सेनानी थे और इतनी बड़ी सल्तनत थी और उस सल्तनत के सामने हम आज़ादी की जंग जीते या नहीं जीते? विदेशी ताकतों को परास्त किया या नहीं किया? भारत छोड़ने के लिए मजबूर किया या नहीं किया? हमी तो थे, हमारे ही तो पूर्वज थे, जिन्होंने यह सामर्थ्य दिखाया था। समय की मांग है, सत्ता के बिना, शासन के बिना, शस्त्र के बिना, साधनों के बिना भी इतनी बड़ी सल्तनत को हटाने का काम अगर हिंदुस्तान की जनता कर सकती है, तो हम भाइयो-बहनो, क्या गरीबी को हटा नहीं सकते? क्या हम गरीबी को परास्त नहीं कर सकते हैं? क्या हम गरीबी के खिलाफ लड़ाई जीत नहीं सकते हैं? मेरे सवा सौ करोड़ मेरे प्यारे देशवासियों, आओ! आओ, हम संकल्प करें, हम गरीबी को परास्त करें, हम विजयश्री को प्राप्त करें। भारत से गरीबी का उन्मूलन हो, उस सपनों को लेकर हम चलें और पड़ोसी देशों के पास भी यही तो समस्या है!



क्यों न हम सार्क देशों के सभी साथी दोस्त मिल करके गरीबी के खिलाफ लड़ाई लड़ने की योजना बनाएं? हम मिल करके लड़ाई लड़ें, गरीबी को परास्त करें। एक बार देखें तो सही, मरने-मारने की दुनिया को छोड़ करके जीवित रहने का आनंद क्या होता है! यही तो भूमि है, जहां सिद्धार्थ के जीवन की घटना घटी थी। एक पंछी को एक भाई ने तीर मार दिया और एक दूसरे भाई ने तीर निकाल करके बचा लिया। मां के पास गए - पंछी किसका, हंस किसका? मां ने पूछा, मारने वाले का या बचाने वाले का? मां ने कहा, बचाने वाले का। मारने वाले से बचाने वाले की ताकत और होती है और वही तो आगे जा करके बुद्ध बन जाता है। वही तो आगे जा करके बुद्ध बन जाता है और इसलिए, (तालियां) मैं पड़ोस के देशों से मिल-जुल करके गरीबी के खिलाफ लड़ाई को लड़ने के लिए सहयोग चाहता हूं, सहयोग करना चाहता हूं और हम मिल करके, सार्क देश मिल करके, हम दुनिया में अपनी अहमियत खड़ी कर सकते हैं, हम दुनिया में एक ताकत बनकर उभर सकते हैं। आवश्यकता है, हम मिल-जुल करके चलें, गरीबी से लड़ाई जीतने का सपना ले करके चलें, कंधे से कंधा मिला करके चलें। मैं भूटान गया, नेपाल गया, सार्क देशों के सभी महानुभाव शपथ समारोह में आए, एक बहुत अच्छी शुभ शुरुआत हुई है। निश्चित रूप से अच्छे परिणाम मिलेंगे, मेरा विश्वास है और देश और दुनिया में भारत की यह सोच, हम देशवासियों का भला करना चाहते हैं और विश्व के कल्याण में काम आ सकें, ऐसा हिन्दुस्तान हाथ फहराना चाहता है। इन सपनों को ले करके, पूरा करके, आगे बढ़ने का हम प्रयास कर रहे हैं।

भाइयो-बहनो, आज 15 अगस्त को देश के लिए कुछ न कुछ करने का संकल्प ले करके चलेंगे। हम देश के लिए काम आएंगे, देश को आगे बढ़ाने का संकल्प लेकर चलेंगे और मैं आपको विश्वास दिलाता हूं भाइयो-बहनो, मैं मेरी सरकार के साथियों को भी कहता हूं, अगर आप 12 घंटे काम करोगे, तो मैं 13 घंटे करूंगा। अगर आप 14 घंटे कर्म करोगे, तो मैं 15 घंटे करूंगा। (तालियां) क्यों? क्योंकि मैं प्रधान मंत्री नहीं, प्रधान सेवक के रूप में आपके बीच आया हूं। मैं शासक के रूप में नहीं, सेवक के रूप में सरकार लेकर के आया हूं और भाइयो-बहनो, मैं विश्वास दिलाता हूं कि ये देश उसकी एक नियति है, विश्व कल्याण की नियति है, यह विवेकानन्द जी ने कहा था। इस नियति को पूर्ण करने के लिए ये भारत का जन्म हुआ है, ये हिन्दुस्तान का जन्म हुआ है। इसकी परिपूर्ति के लिए सवा सौ करोड़ देशवासियों ने तन-मन से मिलकर के राष्ट्र के कल्याण के लिए आगे बढ़ना है।

मैं फिर एक बार देश के सुरक्षा बलों को, देश के अर्द्ध सैनिक बलों को, देश की सभी सिक्योरिटी फोर्सेज को, मां-भारती की रक्षा के लिए, उनकी तपस्या, त्याग, उनके बलिदान, उनका गौरव करता हूँ और मैं देशवासियों को कहता हूँ, “राष्ट्रियाम् जाग्रयाम् वयम्”, “Eternal vigilance is the price of liberty”. हम जागते रहें, सेना जाग रही है, हम भी जागते रहें और देश नए कदम की ओर आगे बढ़ता रहे, इसी एक संकल्प के साथ आगे बढ़ना है। सभी मेरे साथ पूरी ताकत से बोलिए-

भारत माता की (जनसमूह-जय), भारत माता की (जनसमूह-जय), भारत माता की (जनसमूह-जय)।

जय हिन्द (जनसमूह-जय हिन्द), जय हिन्द (जनसमूह-जय हिन्द), जय हिन्द (जनसमूह-जय हिन्द)।

वंदे (जनसमूह-मातरम्), वंदे (जनसमूह मातरम्), वंदे (जनसमूह-मातरम्)!